सीमित वितरण हेतु

किसानों की आवाज का दस्तावेज

cecoedecon

आवाज...

वर्ष-11 अंक-19 अप्रैल 2022 - मार्च 2023

किसान सेवा समिति महासंघ

MISEREOR

MISEREOR

सिकोईडिकोन-निवाई
MISEREOR

भीतर के पन्नों में

1. कहाँ है जनादेश?
2. सामाजिक बदलाव के पुरोधा नहीं रहे
3. ओरण
4. शीर्ष संस्थाओं की क्षमतावर्धन कार्यशाला
5. जी.एम. सरसों पर ट्रायल पर रोक की मांग
6. सफाई कर्मचारी को भाई जैसा प्यार दिया
7. सामाजिक सद्भाव का प्रतीक गोगामेड़ी का मेला
8. सामाजिक बदलाव का अनुपम आदर्श
9. समाज की पगडी बुजुर्ग इन्हे सम्मान से जीने दो, काटो मत पेड़ो को छाव अभी रहने दो
10. भारत माता का लाल
11. पर्यावरण संरक्षण की ओर बढ़ते कदम
12. इन्दिरा महिला शक्ति पुरस्कार मिला
13. जल संरक्षण
14. स्मृति शेष है, चौधरी साहब नहीं रहे
15. सरकारी गैर सरकारी समन्वय कार्यशाला
16. पंचायत राज समन्वय कार्यशला
17. जागो
18. और एनिकट बन गया

किसान सेवा समिति महासंघ

(स्वराज कैम्पस), एफ-159-160 सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थागत क्षेत्र, जयपुर-302022

द्वारा प्रकाशित

संरक्षक व मार्गदर्शन :
श्रीमती मंजू जोशी

संपादक :
भगवान सहाय ढाधीच

ग्राफिक्स :
रामचन्द्र शर्मा एवं भँवरलाल

सम्पादकीय .....

कहाँ है जनादेश?

भारतीय संविधान में देश की प्रभु सत्ता न देश की संसद को दी, न कार्यपालिका के हाथों में दी, बल्कि इसे भारत की जनता के हाथों में दी गयी।

आम जनता को भारत के संविधान द्वारा सर्वोपरी बताये जाने के बावजूद नीतिगत सरकारी निर्णयों में संसद को विश्वास में लिये बिना व आम जन (समुदाय) की घोर उपेक्षा कर विभिन्न समुदायों पर निर्णय थोपने की केन्द्र सरकार की तानाशाही प्रवृति से देश का बुद्धिजीवी वर्ग बेचैन है, आहत है कि देश किस दिशा में बढ़ रहा है? व आम जन इस लोकतन्त्र में कहाँ खड़ा है !

भूमि अधिग्रहण बिल व तीन कृषि कानून देश में थोपने के दुष्प्रयास हुये। परन्तु जन संगठनों व किसान संगठनों के अभूतपूर्व अहिंसात्मक आन्दोलन ने सरकार की नींव हिला दी व सरकार को निर्णय बदलना पड़ा परन्तु सैकड़ों धरती पुत्रों के अनुपम बलिदान से देश शर्मसार हुआ।

आज फिर सरकार भारत में जी. एम. सरसों का उत्पादन कृषि क्षेत्र में थोपने की राह पर चल पड़ी है। क्या यह जी. एम. सरसों से स्वास्थ्य व पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्परिणामों व प्रभावों की अनदेखी कर कृषि क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के घुसपेठ कराने का दुष्चक्र नहीं? जबकि करीब 30 देशो में जी. एम. खाद्यान्न पर रोक है।

किसान संगठन एवं जन संगठन इसके विरोध में विभिन्न गतिविधियॉं (विरोध प्रदर्शन) कर रहे हैं, पर सरकार इस निर्णय पर पुनर्विचार हेतु सहमत नहीं दिख रही? दूसरी ओर हवाई अड्डे, रेल सेवा, बीमा, बैंक व प्राकृतिक संसाधनों का नीजिकरण की प्रक्रिया क्या सन्देश दे रही है।

सरकार की प्राथमिकता में औद्योगिक घराने है न कि प्रतिभाशाली बेरोजगार युवक! सेवा क्षेत्रो में एकाधिकार बढ़ेगा व देश में बेरोजगारी बढ़ेगी। यह है सत्ता का चाल चरित्र व चेहरा। जबकि सरकार राजनैतिक दलों का देश के बुनियादी मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाकर जाति, धर्म के नाम पर सत्ता हासिल करना अन्तिम लक्ष्य रह गया है। कटुसत्य है सत्ता के लिये अधिकतर राजनैतिक दलों ने विचारधारा, नीतियाँ, आदर्श व सिद्धान्तों की तिलान्जली दे दी है।

जिस देश में महात्मा गाँधी, पं. नेहरू, डॉ. अम्बेडकर, डॉ. जाकिर हुसैन, पं. दीनदयाल उपाध्याय, नाना जी देखमुख, राम मनोहर लोहिया, अमृत डांगे, चौधरी चरण सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी जैसे राजनेता महान चिन्तक थे, उनमें एक दृष्टि थी, उनकी मौलिक अभिव्यक्ति थी। साथ ही उनकी प्रभावी लेखनी समाज को सही दिशा के ओर अग्रसर करती थी, राजनीति व सत्ता गौण थी उनके लिए, समाज हित सर्वोपरि था, जनता के मुद्दे व आवाज संसद व बाहर गूंजा करती थी। वे लोकमत के प्रति संवेदनशील रहे।

उनकी नीतियों के खिलाफ आवाज उठाने वालों को भी ससम्मान सुनते थे, विरोधी राजनेताओं में भी आपस में प्रेम व श्रद्धा का भाव था। पर आज सच बोलना तो व्यवस्था (सरकार) के खिलाफ बगावत करने जैसा हो गया है।

सही है आजादी के बाद से ही विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधन ग्राम व कृषि आधारित रचना को तबाह कर शहरीकरण एवं औद्योगिकरण के मार्ग पर चलना शुरू हो गया था। आज भी देश की 65 प्रतिशत जनता कृषि पर निर्भर है, अल्प वर्षा जल की कमी, जलवायु परिवर्तन की विश्वव्यापी उष्णता, रसायनों व उर्वरकों के असन्तुलित प्रयोग से कृषि व किसानों के समक्ष चुनौती है। फिर जी. एम. सरसों ट्रायल व सरकार को कृषि व अन्य जनहित मुद्दों पर निर्णय लेने व निजिकरण सिफारिश करने से पूर्व जो समुदाय इन फैसलों से प्रभावित हो रहा है, उनके प्रतिनिधियों के साथ विचार मन्थन करने की नीति अमल में लायी जाये, जिससे इन मुद्दों पर हर स्तर पर व्यापक बहस हो सके।

आज देश में ग्राम, कृषि, पशुधन, पर्यावरण संरक्षण का प्रश्न गम्भीर रूप से खड़ा है। इस हेतु वैचारिक क्रान्ति होनी चाहिये। जिससे सिंहासन खाली करो, कि जनता आती है; रामधारी सिंह दिनकर की कविता चरितार्थ हो –

सामाजिक बदलाव के पुरोधा नहीं रहे

– भगवान सहाय दाधीच

सामाजिक परिवर्तन के वाहक माननीय पी. एल. मिमरोठ साहब नहीं रहे। इससे सामाजिक क्षेत्र एवं दलित समुदाय को अपूरणीय क्षति हुयी है। उन्होंने जीवन भर जातिगत विषमता दूर करने दलित वर्ग में स्वाभिमान जगाने, उन्हें उनका अधिकार एवं न्याय दिलाने व सामाजिक कुरूतियों के विरूद्ध जमकर संघर्ष किया। इस अभियान में उन्हें समाज के हर वर्ग का समर्थन मिला।

सरल, सौम्य, व्यवहारिक स्नेहयुक्त व्यवहार के धनी श्री मिमरोठ साहब दलित वर्ग के शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार हेतु पूरी निष्ठा से प्रयासरत रहे। ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी श्री मिमरोठ साहब से मेरा 2001 से ही सजीव सम्पर्क रहा, वे व्यक्ति नहीं विचार थे। वे सामाजिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के लिये पथ प्रदर्शक थे। सभी कार्यकर्ताओं के सुख–दुःख में भागीदार रहे।

अपने सिद्धान्तों, नैतिक मूल्यों पर अडिग दृढ़ निश्चयी श्री मिमरोठ साहब विपरीत परिस्थितियों में भी विचलित नहीं हुये, दलितों के साथ जातिगत भेदभाव हो या तथ्यात्मक दलितों के भू–अधिकार का मुद्दा हो, उन्होंने राज्य, राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय मन्चों पर तथ्यात्मक एवं प्रभावी ढंग से उठाया, व उन मुद्दों को परिणाम तक ले गये।

राजस्थान–में–सन् 2000 में डरबन कान्फ्रेन्स में नस्लवाद भेदभाव पर विश्व सम्मेलन हुआ था, जिसमें पहली बार भारत में जातिगत भेदभाव के मुद्दे को दुनियां भर के देशों, यूरोपियन देशों और अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों के सामने प्रभावी ढ़ंग से उठाया गया था। डरबन कान्फ्रेन्स के दौरान ही सिकोईडिकोन के सचिव महोदय माननीय शरद जी जोशी एवं माननीय पी. एल. मीमरोठ साहब की मुलाकात हुयी।

यहां आपस में विचार–विमर्श के दौरान के बाद श्री जोशीजी ने श्री मिमरोठ साहब को राजस्थान कर्म क्षेत्र चुनने का सुझाव दिया, कि राजस्थान में छुआछूत व जातिगत भेदभाव ज्यादा है, इसलिये राजस्थान में दलित आन्दोलन खड़ा किया जाये। श्री जोशीजी के आमन्त्रण पर आपने राजस्थान आने का निर्णय लिया व दलित अधिकार केन्द्र का गठन किया।

श्री पी. एल. मिमरोठ के कुशल मार्गदर्शन व उनकी बुद्धिजीवियों व आम लोगों को अपने साथ जोड़ने की अदभुत क्षमता से दलित अधिकार केन्द्र कम समय में ही दलित वर्ग की राज्यव्यापी आवाज बन गया। जन सुनवाईयां कार्यशालाऐं; धरने–प्रदर्शनों ने दलित आन्दोलन की नई दिशा दी। परिणामस्वरूप उनके एक पत्र का असर होता था कि अधिकारी वर्ग भी दलित मुद्दों पर संवेदनशील एवं जवाबदेही की भूमिका निभाने लगा। सामाजिक परिवर्तन की लहर चल पड़ी।

उनका स्पष्ट मत था, दलित व दबे कुचले वर्ग को उनके अधिकार व न्याय सिर्फ भाषणों, लेखों, सरकारी योजनाओं के बुते नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता का महान लक्ष्य लेकर आम वर्ग की मानसिकता बदलने से सम्भव है। समाज हित में किये गये उल्लेखनीय कार्यों हेतु 2009–10 में राजस्थान सरकार (सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग) द्वारा सामाजिक न्याय पुरस्कार एक लाख रूपये एवं प्रशस्ती–पत्र मा. मुख्यमन्त्री महोदय अशोक जी गहलोत द्वारा प्रदान किया गया।

दलित व गरीब को त्वरित न्याय मिले, यह उनका सपना था, उनका जीवन ही उनका सन्देश था, समाज को ऊर्जा व दिशा दे गये। जाति–धर्म के नाम पर टूटते–बिखरते समाज की जगह ..... भारतीयता के आधार पर सामाजिक समरसतायुक्त सशक्त समाज के निर्माण के उनके दिखाये मार्ग पर अनवरत हमें चलते रहना है, यही उस महान आत्मा के प्रति सच्ची श्रृद्धान्जली है।

ओरण

– अनुपम मिश्र

ओरण एक समर्पित वन का नाम है, इस वन का अपना एक संविधान होता है, कि कोई इस वन से हरा पेड़ नहीं काट सकेगा, कोई वन से आर्थिक लाभ नहीं लेगा। कोई इस वन में बसने वाले जीव की हत्या नहीं करेगा। सभी जीव–जन्तु निर्भय विचरण करते हैं। इस वन में एक थान होता है, जैसे रामदेवजी का थान, भोमियाजी का थान, ओरण समर्पित वन में उस देवता का पूजन स्थल होता है।

ऐसी मान्यता है, ऐसा वन उस देवता का निवास स्थान होता है। वे देवता इस वन में विचरण करते थे। कोई सड़क इन वनों के बीच होकर नहीं गुजरती। इन वनों में गायों, बकरियों, भेड़ों, हरिणों आदि सभी वन्य जीवों को सदा अभयता दी है।

गायों, मवेशियों का सूखा गोबर व सूखी झाड़ियाँ ईंधन के रूप में बटोरने की यह वन अनुमति अवश्य देते हैं; पगडन्डियों पर आने–जाने से ग्रामों का इन वनों के साथ जीवन्त रिश्ता बना रहता है। इन भावनात्मक सम्बन्धों के चलते इन वनों में जगह–जगह पेड़ों पर पक्षियों के लिये पीने के पानी के छींके टके रहते है।

गांव वाले आते–जाते छींको में पानी भरते हैं। इस प्रकार चीड़ियों को चुग्गा डालने व कीड़ी– नगरा सींचने की सनातन प्रथा भी अनवरत चली आ रही है। वन्य जीवों को पेयजल हेतु कई जगह पत्थर व सीमेन्ट की खेलियां रखवायी जाती है। वनों के रक्षक राजस्थान के लोक देवता धरती, गायों, पानी, जंगलों, वनस्पतियों व प्रकृति के रखवाले थे। ये देवता समाज में न्याय के संस्थापक थे, इन्सानियत के लिये व सामाजिक कुरूतियों (भेदभाव) के विरूद्ध संघर्ष करते रहे।

राजस्थान में ओरणों का प्रदेश की भौगोलिक व पर्यावरणीय परिस्थिति से सीधा सम्बन्ध है। पर्यावरण संरक्षण के साथ जैव विविधता का संरक्षण व संवर्धन होता रहा है। इन ओरणों में साथ ही प्रकृति, जीव–जन्तु वनस्पतियों के साथ अहिंसक रिश्ता विकसित किया है। लेकिन आज हमारा समाज ओरणों के सामाजिक, पर्यावरण महत्व को भूलने लगा है। अब अनेक ग्रामों में ओरणों की भूमि के प्रति श्रृद्धा व पवित्रता की भावना कम होती जा रही है। दुर्भाग्य से सिमटते ओरणों के प्रति सरकारों का नेतृत्व का ज्यादा ध्यान नहीं है।

कोई 200 वर्ष पूर्व अंग्रेजों ने जब जाने–अनजाने में ओरण के व्यवस्थित ढ़ांचे को तोड़ना शुरू किया था। आजादी के बाद इस विषय पर संवेदनशीलता व गम्भीरता दिखाई जानी चाहिये थी, वह नहीं दिखाई दी। जिससे विकास के नाम इन्हें

उजाड़ने के प्रयास हुये। आज भी जो ओरण फल– फूल रहे है, वहां दुर्लभ प्रजाति की झाड़ियां, वनस्पतियां, जड़ी–बूंटियां विलुप्त होती पशु–पक्षियों की प्रजातियां देखी जा सकती है। वहां जैव विविधता चरम पर है।

पिछले कुछ समय से समुदाय का ध्यान ओरणों की तरफ जाने लगा है। इनके विकसित करने के उपाय किये जा रहे हैं। यह शुभ लक्षण है। ओरण पर फिर लौटने का समय आ गया है, जिससे राजस्थान में फैलते सूखे (जलवायु परिवर्तन) (ग्लोबल वार्मिंग) वैश्विक तपन, बदलते मौसम चक्र पर थोड़ी राहत मिले।

शीर्ष संस्थाओं की क्षमतावर्धन कार्यशाला

किसान सेवा समिति महासंघ, महिला संगठन एवं युवा मंच आदि संगठनों की एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला, सिकोईडिकोन परिसर, शीतला (चाकसू) में आयोजित की गयी।

प्रशिक्षण का मूल उद्देश्य समुदाय आधारित इन संगठनों में अन्तर्राष्ट्रीय–राष्ट्रीय एवं ग्राम स्तर के मुद्दों पर एकरूपता के साथ साझा समझ बनाने की प्रक्रिया जारी रखने दलित, महिला, युवा वर्ग व दूसरी पंक्ति का नेतृत्व विकसित कर इनकी विकास में सक्रिय भागीदारी बढ़ाना, स्वतन्त्र निर्णय, आत्मनिर्भरता की चुनौती के साथ समाज के निर्धन एवं वंचित वर्ग की सतत आजीविका व खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर सशक्तिकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना है।

कार्यशाला पैरवी संस्था (दिल्ली) के निदेशक श्री अजय झा, जिन्होंने जलवायु परिवर्तन एवं सतत विकास लक्ष्य आदि मुद्दों पर अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है व प्रभावी ढ़ंग से भारत का पक्ष रखा है, ने कार्यशाला में जलवायु परिवर्तन, सतत विकास लक्ष्य विषयों पर अन्तर्राष्ट्रीय मन्चों पर चल रही गतिविधियों, निर्णयों की विस्तृत जानकारी देकर इनके देश, राज्य व ग्रासरूट पर समुदायों पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति आगाह किया व बताया, विकसित देश गैस उत्सर्जन के मुद्दे पर दोहरा रूख अपनाने से सम्मेलनों में गतिरोध आता रहा है।

सिकोईडिकोन के निदेशक श्री पी. एम. पाल साहब ने संगठनों के सांगठनिक ढांचे को मजबूत कर आपसी समन्वय के साथ क्षेत्र की समस्याओं एवं मुद्दों को उठाने पर बल दिया। साथ ही कहा आत्मनिर्भरता हेतु अन्य विकल्प भी चयन कर राज्यस्तर पर नेटवर्क बढ़ाने की दिशा में अनवरत आगे बढ़ते रहना है।

उपनिदेशक श्री आलोकजी व्यास ने कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुये सामुदायिक संगठनों द्वारा उठाये गये मुद्दों पर उपलब्धियॉ, अपेक्षाओं व चुनौतियों पर खुली चर्चा की।

सिकोईडिकोन संस्था की सचिव महोदया माननीया मन्जू जी जोशी ने कार्यशाला के सहभागियों को नई ऊर्जा के साथ अपने विज़न–मिशन (समाज के आखिरी व्यक्ति के अधिकार व न्याय के साथ उसमें नेतृत्व भावना विकसित करने के कार्य को और गति देने का आह्वान किया व कहा संस्था हर कदम पर आपके साथ है। हमें बदलते राजनैतिक परिवेश में व नई रूपरेखा व रणनीति के साथ अपने कार्य को सतत्, आगे बढ़ाते रहना है।

धन्यवाद व आभार श्री कैलाश गुर्जर, अध्यक्ष किसान सेवा समिति महासंघ ने दिया।

जी.एम. सरसों पर ट्रायल पर रोक की मांग

राजस्थान में जी. एम. सरसों की फील्ड़ ट्रायल की अनुमति नहीं देने हेतु किसान सेवा समिति महासंघ के प्रतिनिधि मण्डल ने मुख्यमन्त्री महोदय एव कृषि मन्त्री महोदय (राजस्थान सरकार) से मिलकर आग्रह किया।

प्रतिनिधि मण्डल में किसान सेवा समिति महासंघ के अध्यक्ष कैलाश गुर्जर, उपाध्यक्ष हरि नारायण सूत्रकार, सचिव भगवान दाधीच सहित अनेक किसान प्रतिनिधि शामिल थे। ज्ञापन में बताया गया कि राजस्थान कृषि प्रधान राज्य है, जिसकी 65 प्रतिशत जनता कृषि पर निर्भर है। अल्पवर्षा, जल की कमी, जलवायु परिवर्तन की विश्वव्यापी उष्णता, रसायनों व उर्वरकों के असन्तुलित प्रयोग से किसानों व कृषि के समक्ष चुनौती है।

इसी सन्दर्भ में केन्द्र सरकार की जी इ ए सी की 18 अक्टूबर को हुई बैठक में जी. एम. सरसों की डी.एम.एच. (धारा मस्टर्ड हाईब्रिड की II किस्म को चार साल के लिये एनवायरमेन्ट रिलीज की सिफारिश की है। जबकि जी.एम. सरसों से स्वास्थ्य व पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्परिणामों व प्रभावों की अनदेखी की गई व अध्ययन रिपोर्ट पेश की गयी जबकि विभिन्न शोधों व अनुसंधानों से यह सिद्ध नहीं होता कि जी.एम. बीज स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए अनुकूल है।

राजस्थान में देश की 45 प्रतिशत सरसों का उत्पादन होता है व यहां सरसों की ऐसी किस्में मौजूद हैं जिससे जी.एम. सरसों के बराबर व ज्यादा पैदावार होती है। जी.एम. से यहां 25 प्रतिशत सरसों उत्पादन बढ़ाने का दावा खोखला व निराधार है। जी.एम. सरसों से बने खाद्य तेल व खाद्य से हम जहर खाने को मजबूर होंगे।

यह सिफारिश बहुराष्ट्रीय कम्पनियों विशेषतः देश व राज्य के कृषि क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को कृषि क्षेत्र में घुसपैठ कराने की साजिश का हिस्सा है।

मॉगें:–

1. जीएम सरसों की फील्ड ट्रायल को अनुमति नहीं दी जाये एवं इस गम्भीर मुद्दे पर किसान संगठनों के साथ चर्चा के उपरान्त ही निर्णय लिया जाये।
2. परम्परागत बीजों के सरंक्षण हेतु समुदाय आधारित बीज बैंक के लिये प्रोत्साहन दिया जाये।
3. देश व राज्य को जीएम फ्री स्टेट घोषित किया जाये ताकि जैनेटिकली मॉडिफाइड बीजों से पर्यावरण व स्वास्थ्य पर होने वाले खतरों व किसानों की आजीविका पर पड़ने वाले प्रभावों से बचा जा सके।
4. सरकार ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर सिफारिश करने से पूर्व जो समुदाय इन फैसलों से प्रभावित हो रहा है, उनके प्रतिनिधियों के साथ विचार–मन्थन करने की नीति अमल में लायी जाये, जिससे इन मुद्दों पर व्यपक बहस हो सके।
5. दुनिया में अभी तक सार्वभौमिक रूप से यह साबित नहीं हुआ है कि जीएम खाद्यान्न स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए पूर्णतः सुरक्षित है बल्कि करीब 30 से अधिक देशों में जीएम खाद्यान्न पर प्रतिबंध है। ऐसी स्थिति में जल्दबाजी में लिया गया निर्णय अंततः किसानों व आमजन के जीवन के साथ खिलवाड़ होगा।
6. अतः आपसे निवेदन है कि जीएम सरसों की फील्ड ट्रायल की अनुमति प्रदान न कर सर्वहित में निर्णय लें।

मुख्यमन्त्री महोदय एवं कृषि मन्त्री महोदय ने किसान प्रतिनिधियों का पक्ष गम्भीरता से सुना।

सफाई कर्मचारी को भाई जैसा प्यार दिया

कलकत्ता नगर में महामारी का प्रकोप था, न औषधि का ठिकाना था न अन्तिम क्रिया का! लोग करूणा–हीन एवं क्रूर बन गये थे।

एक दिन पण्डित ईश्वर चन्द विद्यासागर विद्यालय जाने के लिये घर से निकले। मार्ग में एक मनुष्य पड़ा हुआ दिखाई दिया। वह सफाई कर्मचारी था, झाड़ू आदि उसकी वस्तुऐं पास ही पड़ी थी, वह छटपटा रहा था, कितने ही लोग उस रास्ते से आ जा रहे थे, किन्तु किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। पं. ईश्वर चन्द दौड़कर उसके पास गये। उन्होंने उसे हाथ लगाकर देखा। वह तीव्र ज्वर से पीड़ित था, उसकी बेहोशी जैसी स्थिति हो गयी थी।

सप्रसिद्ध समाज सेवी पं. ईश्वर चन्द जी विद्या के सागर ही नहीं थे, करूणा के सागर थे। उन्होंने उस सफ़ाई कर्मचारी (मेहतर) को अपनी पीठ पर उठाया – और उसे अपने घर ले गये। उसे कपड़े पहनाये और बिस्तर पर लिटाया। फिर डॉक्टर को बुलाकर उसका उपचार करवाया, कुछ परिवारजन व पड़ौसियों ने दबी जबान से इस कृत्य का विरोध किया। परन्तु इस सबसे बेखबर पण्डितजी उसकी सेवा–सुश्रुवा में लगे रहे, स्वयं देखभाल करते।

आस–पास के पड़ौसी पूछते, ये कौन हैं, कहॉ रहता है, क्या करता है, ईश्वर चन्द शान्त भाव से उत्तर देते यह मेरा भाई है हम दोनों एक ही काम करते हैं। यह बाहरी सफाई करता है, जबकि मैं भीतरी सफाई करता हूँ।

परिजनों व पड़ौसियों ने उन्हें बहुत समझाया, धमकाया, प्रबल विरोध किया परन्तु वे टस से मस नहीं हुये। पन्द्रह दिन के बाद वह व्यक्ति स्वस्थ हो गया। जब वह जाने लगा तो ईश्वर चन्द जी ने कहा मैं तुम्हारा भाई हूं जब भी कोई जरूरत पड़े तो निसंकोच बताना व यह भाईचारा उन्होंने आजन्म निभाया।

काश राष्ट्र व समाज इनके दिखाये मार्ग पर चलता / सीख लेता।

सामाजिक सद्भाव का प्रतीक गोगामेड़ी का मेला

राजस्थान में लोक देवताओं ने समय–समय पर अवतरित होकर धार्मिक चेतना के साथ राष्ट्रीयता का बोध, समाज की कुरूतियां, छुआछूत भेदभाव मिटा सामाजिक समरसता लाने के लिये शंखनाद कर जन जागरण किया है व समाज में नयी चेतना व ऊर्जा का संचार किया है।

ऐसे ही लोक देवता है पूज्य गोगाजी महाराज। गोगाजी पंचपीरों में प्रसिद्ध पीर एवं सांपों के देवता माने जाते हैं। गोगाजी नाग वंशीय शासक थे, उन्हें सर्प मन्त्रों का भी पूरा ज्ञान था। इस सम्बन्ध में इन्होंने चमत्कारिक कार्य किये। गोगाजी एक वीर महापुरूष थे, जिन्होंने अनेक युद्ध आततताईयों से लड़े एवं अनेक बार गौ रक्षा की। गोगाजी महाराज ने ग्यारह बार विधर्मी आततताईयों से युद्ध कर उन्हें हराया।

महमूद गज़नवी जब सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण करने आया तो गोगा देव जी ने अपने साथियों के साथ वीरतापूर्वक युद्ध करते हुये वीर गति पायी। इतिहासकार गोगाजी को एक वीर पराक्रमी, देशभक्त, जीवन के उच्च सिद्धान्तों के प्रतीक देश व समाज के प्रति समर्पित योद्धा भारत की संस्कृति व सभ्यता के रक्षक के रूप में मानते हैं। राजस्थान सहित अनेक राज्यों के के भक्त (श्रृद्धालू) इनकी परम श्रृद्धा से लोक देवता के रूप में पूजा– अर्चना कर अपनी मनोकामना पूरी करते हैं।

इतिहासकारों की आम राय अनुसार गोगाजी का जन्म (अवतार) राजस्थान के चुरू जिले के ददैरवा गांव में विक्रम संवत 1003 को हुआ। विदेशी आक्रान्ताओं के हमलों की वजह से आपका पालन– पोषण विषम परिस्थितियों में हुआ। शास्त्र के साथ अस्त्र–शस्त्र की विद्या में भी गोगाजी निपुण हो गये।

लोक देवता गोगाजी महाराज की स्मृति में गोगामेड़ी एवं जन्मस्थान ददैरवा में लक्खी मेले लगते है, जिसमें राजस्थान के अलावा पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश के लाखों श्रद्धालु लोक देवता पूज्य गोगाजी चौहान की आराधना पूजा अर्चना करते हैं व मुरादें पूरी करते हैं।

गोगामेड़ी मेला भाद्रपद बुदी एकम से भाद्रपद सुदी 15 तक लगता है। मेले में हिन्दू–मुस्लिम सम्प्रदाय के सदभाव के भाव के साथ छुआछूत–भेदभाव रहित सामाजिक समरसता के प्रत्यक्ष अनुभव व सुखद अनुभूति प्राप्त करते हैं। गोगामेड़ी राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के नोहर तहसील में है।

गोगामेड़ी नाम जवाहर वीर गोगाजी की समाधि पर बने मन्दिर का है। महाराजा गंगा सिंह ने वि.सं. 1961 में इसका जीर्णोद्धार कर इसे वर्तमान मेड़ी का रूप दिया। सभा मन्दिर के मध्य भाग में गोगाजी की संगमरमर की समाधि है। समाधि के सामने अश्वारोही गोगाजी की प्रतिमा है; हाथ में भाला है तथा गले में सर्प लिपटा हुआ है। गोगाजी मन्दिर भी विशिष्ट है, यह मस्जिदनुमा बना हुआ है, जिसमें मीनारें बनी हुयी है।

किदवन्ती है कि महमूद इनका भक्त बन गया था। अपनी इच्छा पूरी होने, उसने मन्दिर की मरम्मत करवायी तथा दोनों ओर मीनारों का निर्माण करवाया। गोगामेड़ी समाधि एवं मन्दिर में प्रवेश को लेकर जातीय भेदभाव नहीं है। सभी समाज पूजा अर्चना करते हैं। गोगाजी के प्रमुख पूजा स्थलों में गोगामेड़ी व ददरैवा (चुरू जिला) की मेड़ी प्रमुख है।

लोकमान्यता गोगाजी का मस्तक रणक्षेत्र में जूझते हुये ददैवरा में गिरा था। वे जूझारू होकर बिना मस्तक (माथे) (कबन्ध) आक्रान्ताओं से लड़ते–लड़ते गोगामेड़ी तक पहुंचे, जहॉ उनका धड़ गिरा था। इसके अतिरिक्त गोगाजी के अन्य पूजा स्थलों में बिल्यू, गोगासर बलूंछ, कांगड चुरू आदि की मेडिया विशेष उल्लेखनीय है।

प्रायः राजस्थान के प्रत्येक गांव में खेजड़ी के नीचे पूज्य गोगाजी का थानक होता है। गांव–गांव में गोगाजी की खेजड़ी। गोगामेड़ी तालाब से भक्तजन पवित्र मिट्टी ले जाते है, जिससे सर्पदंश ठीक हो जाता है। इनके नाम से भी सर्प विष उतारने के प्रयोग सफल होते हैं। मन्दिर का मुखिया नाथ समुदाय का होता है।

लोक मान्यता है गुरू गोरखनाथ ने यहॉ पर तपस्या की थी। यहां गोरख टीला गोरखनाथ धूने के रूप में प्रसिद्ध है। लाखों भक्तों के साथ यहां पशुपालन विभाग द्वारा पशु मेले का भी आयोजन किया जाता है।

सामाजिक बदलाव का अनुपम आदर्श

12 नट बालिकाओं ने सिकाईडिकोन संस्था के माध्यम से उंची उडान भरी है। वे आज वनस्थली विद्यापीठ में पढाई कर रही है। जीया और प्राची 10वीं कक्षा में, टीसा, शिखा, साक्षी 12वीं कक्षा में, भूमिका, नीलाक्षी, भाग्यशाली, तरूणा 11वीं कक्षा में और रिया, स्नेहा और सेबी बी.ए. कर रही हैं। संस्था के अथक प्रयासों से यह हो पाया है। परिवार जनों का अभी भी बालिकाओं पर दबाव बना रहता है कि वे पीढियों से चले आ रहे कार्य को आगे बढायें किन्तु बालिकाओं ने ठांन लिया है कि वे समाज को बदल कर ही दम लेंगी। नट समुदाय में चल रही देह व्यापार की कुरीति को समाप्त करेंगी और आने वाली पीढी को सम्मान और स्वाभीमान के साथ जीने का दृष्टिकोण देंगी।

सभी बालिकाऐं कहती है कि हमें सरकारी नौकरियों में जाना है हमारे समाज को यह बताना है कि हम सब कुछ कर सकते हैं। सेबी माधीवाल कहती है कि मुझे प्रशासनिक सेवा में जाना है। यही एक ऐसा पद है जो हमारे समाज की सोच बदल सकता है। सेबी की बी.ए. इस वर्ष पूर्ण हो रही है वह जयपुर में आई.ए.एस. की तैयारी करना चाहती है। रिया और तरूणा पुलिस सेवा में जाना चाहती है। स्नेहा व्याख्याता और भाग्यशाली अध्यापक बनना चाहती है।

ये सभी बालिकाऐं बनस्थली में बहुत खुश हैं इनकी दिनचर्या बहुत ही नियमित में वे सुबह और शाम को खेलने जाती हैं प्राची और जीया क्रिकेट खेलती हैं, रिया कबड्डी, तरूणा बेडमिंटन, नीलाक्षी और भाग्यशाली नृत्य और गायन में भाग लेती हैं। बनस्थली के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ चढ कर हिस्सा लती हैं और अपनी प्रतिभा दिखाती हैं। वे नियमित कक्षाओं में जाती हैं और अतिरिक्त कक्षाऐं लगती हैं तो उनमें भी जाती हैं। अपनी पढाई के प्रति हमेशा सजग रहती हैं। सिकोईडिकोन संस्था ने आई पार्टनर इण्डिया के सहयोग से इन बालिकाओं का सम्पूर्ण खर्च वहन किया हुआ है।

जीवन में अभी असली उड़ान बाकी है।
हमारे इरादों का अभी इम्तिहान बाकी है।
अभी तो नापी है हमने थोड़ी जमींन
अभी तो पूरा आसमान बाकी है।।

समाज की पगडी बुजुर्ग इन्हे सम्ममान से जीने दो, काटो मत पेड़ो को छाव अभी रहने दो

वर्तमान समय मे समाज मे वृद्धजनो को अनेक समस्याओ का सामना करना पडता है जिसमे आर्थिक,सामाजिक एवं भावनात्मक समस्याए मुख्य है जहाँ आज युवाओ को आजीविका के लिए बाहर जाना पडता है जिसके कारण संयुक्त परिवार कम होते जा रहे है वृद्धजनो को अकेले रहना पडता है यह भी एक मुख्य समस्या है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज फाउंडेशन के सहयोग से संस्था सिकोईडिकोन करौली जिले मे वृद्धजनो के साथ कार्य कर रही है इस परियोजना के तहत अलग अलग प्रयासो के माध्यम से वृद्धजनो के सहयोग एवं सम्मान हेतु कार्य किया गया इन प्रयासो के तहत वृद्धजन स्वयं सहायता समूह गठन ,वृद्धजन क्लब संचालन, वृद्धजनो द्वारा बच्चो को कहानी कहने– सुनने की प्रक्रिया के माध्यम से अन्तरंग पिढि संबंध स्थापित करना, युवाओ को वृद्धजनो की समस्याओ के बारे मे सवेंदनशील एवं जागरूक करना वृद्धजनो को विभिन्न सरकारी समाजिक सुरक्षा योजनाओ से जोडना वृद्धजनो के स्वास्थ्य हेतु स्वास्थ्य शिविरो का आयोजन किया जाना आदि कार्य किये गये जिनके सार्थक परिणाम सामने आये है किये गये प्रयासो के परिणाम सामने आये है

कहानी 1. यह कहानी सामल देवी पत्नि श्री मगन लालजाटव उम्र 65 वर्ष ग्राम पहाडीपुरा , ग्राम पंचायत सौरया जिला करौली की रहने वाली एक विधवा महिला की है। जो वृद्वावस्था पेंशन धारक भी है पिछले एक वर्ष से उसकी पेंशन अपने खाते मे नही आ रही थी जिसके लिए उन्होने विभाग मे जाकर जानकारी लेने का प्रयास किया गया लेकिन अनपढ होने के कारण विभागीय कर्मचारियो द्वारा ई मित्र जाकर जानकारी लिजिए बहाना लेकर टाल दिया जाता था एवं जब ई मित्र संचालको से बात करती तो वो सामल देवी से पेंशन चालू करवाने के लिए रूपये मागते थे। गांव मे सामल देवी जी को वृद्धजन स्वयं सहायता समूह सदस्य उगन्ती देवी के माध्यम से पता चला कि गाव मे बुजुर्गो कि सहायता के लिए एक संगठन कार्य करता है जिसकि मिटिग हर माह कि 26 तारिख को उगन्ती देवी के घर पर होती है तो सामल देवी जी ने अगस्त 2022 माह कि मिटिग मे हिस्सा लेकर अपनी बात को समूह सदस्यो के सामने रखा । जिसपर समुह के सदस्यो ने मोबलाईजर जगराम जी को सामल देवी जी कि पेंशन चालू करवाने कि जिम्मेदारी दी जिसपर जगराम जी ने प्रयास करते हुए पहले विभाग मे जाकर पेंशन बन्द होने का कारण पता लगया जिसमे पता लगा कि सामल देवी जी का जनआधार अपडेट नही है व पेशन सत्यापन नही हुआ है उसके बाद जगराम जी ने सामल देवी जी को ईमित्र पर लेजाकर उनका जनआधार अपडेट कराया गया एवं पेशन सत्यापन करवाया गया उसके एक माह बाद सामल देवी जी को एक वर्ष की रूकी हुई पेंशन 12000 रूपये एक साथ प्राप्त हुए सामल देवी जी की खुशी का ठिकाना ही नही था सामल देवी ने पेंशन मिलने पर समूह सदस्यों एवं मोबिलाईजर जगराम को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।साथ ही समला देवी ने वृद्धजन संगठन की सराहना करते हुये बताया की यह संगठन हमारे लिए बहुत अच्छा है।

कहानी 2. यह कहानी चतुरी देवी पत्नि श्री बदन सिंह उम्र 76 वर्ष ग्राम नयापुरा , ग्राम पंचायत राजौर जिला करौली की रहने वाली की है जो एक विधवा महिला है। उसके एक बेटा है जिसकी शादी 6 माह पुर्व हुई थी। बेटे की शादी होने की मॉ को बहुत खुशी थी कुछ दिनो बाद बेटे और बहु मॉ को परेशान करने लग गये समय पर खाना नही देते थे एवं बात बात पर लडना चतुरी देवी बहुत परेशान हो गई लेकिन जाए तो कहा जाए कुछ दिनो बाद गाँव मे इस बात का पता लगा उसके बाद गाँव के लोगों ने चतुरी देवी के घर गये और उसके बेटे को समझाया की आपके अलावा इनका कौन है

आप इनको परेशान करोगे तो यह कहा जाएगी आप उपनी मॉ को परेशान नही करे अन्यथा इसकी सुचना पंचायत मे की जाएगी बेटे ने गाव के लोगो की बात मानकर अपनी मॉ से माफी मागी और कहा की आगे से ऐसा कभी नही होगा गांव के लोग बुजुर्गो के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने लगे है । चतुरी देवी ने गांव के लोगो को धन्यवाद दिया।

उपरोक्त उदाहरणो के अलवा भी एसे कई उदाहरण है जो वृद्धजनो के सम्मान मे सामने आये है इस प्रकार के प्रयास परियोजना मे न बंधकर अन्य क्षेत्रो मे किये जाने की आवश्यकता है जिससे वृद्धजनो की समस्याओ को कम किया जा सके एवं वृद्धजन सम्मान पूर्वक जीवन जी सके।

बड़ो की उंगली पकड़कर चलना सीखा, अब उनका हाथ थामना न भूले।

समन्वयक – देवेन्द्र कुमार जांगिड़

भारत माता का लाल

– संदीप कुमार सिंह

भरे पेट सभी जनों का, माटी में फसल उगाता है।
भारत माता का लाल वही, अपना किसान कहलाता है।
आलस तनिक न तन में रहता, भय न कभी भी मन में रहता।
कोई भी विपदा आ जाये, हंसकर वह सबकुछ सहता।
बस रहे सदा परिवार सुखी, जिसके संग उसका नाता है।
भारत माता का लाल वही, अपना किसान कहलाता है। (1)

कष्ट न देती धूप–दिवस की, न अंधेरी रात डराती है।
डटा रहे हर समय खेत में, जब तक न फसल पक पाती है।
सूरज से उठने से पहले, वह पहुंच खेत में जाता है।
भारत माता का लाल वही, अपना किसान कहलाता है। (2)

करे परिश्रम खेतो में, समय की मार भी सहता है।
मेहनत करता है, पूरी और संयम भी बांधे रखता है।
बोझ जिम्मेदारियों का, अकेला वही उठाता है।
मिले न दो निवाले कभी तो, वह भूखा ही सो जाता है।
भारत माता का लाल वही, अपना किसान कहलाता है। (3)

न जाने किस कलम से रचता, पुष्कर उसका भाग्य विधाता।
ऋणी हो गया आज हमारे, हिन्दुस्तान का अन्नदाता।
नहीं सहारा मिलता जब, फांसी को गले लगाता है।
भारत माता का लाल वही, अपना किसान कहलाता है।
धरती माने मां के समान, नित उसको शीश नवाता है।
भारत माता का लाल वही, अपना किसान कहलाता है। (4)

पर्यावरण संरक्षण की ओर बढ़ते कदम

ग्राम पंचायत बीची सिकोईडिकोन संस्था एवं ग्राम विकास समिति बीची के आपसी समन्वय, तालमेल एवं सहयोग से बीची की 15 बीघा भूमि पर वृक्षरोपण कर पर्यावरण सरंक्षण का उल्लेखनीय कार्य किया है। यहॉ विभिन्न प्रजातियों के पौधे लहलहाने की ओर अग्रसर है।

सिकोईडिकोन संस्था के कार्यकर्ताओं ने चरागाह विकास योजना के अन्तर्गत, बीची के सरपंच महोदया श्री भूरी देवी जी बैरवा व ग्राम विकास समिति बीची अध्यक्ष, किसान सेवा समिति उपाध्यक्ष श्री भंवर सांडीवाल के प्रस्ताव पर उनकी रूचि व लगन देखते हुये नवनिर्मित ग्राम पंचायत भवन के सामने 15 बीघा चरागाह भूमि पर वृक्षारोपण का निर्णय लिया। तीनों संगठनों के सहमति,सहयोग से कार्य की रूपरेखा बनी।

सिकोईडिकोन संस्था ने पूरे 15 बीघा में तारबन्दी व करीब 600 पौधे उपलब्ध करवाये। पौधों में करन्ज, शीशम, अर्जुन, गुलर, नीम, पीपल आदि के पौधे प्रमुख है। ग्राम पंचायत बीची सरपंच महोदया जी के द्वारा पौधों के लिये खाद, दवाईयां, पानी के गार्ड (सुरक्षा हेतु) की व्यवस्था अनवरत बनी हुयी है। ग्राम पंचायत द्वारा खाद, दवाईयां, पानी, सुरक्षा गार्ड के अपनी सहमति का अक्षरसः पालन किया जा रहा रहा है।

बीची से खेड़ा बालीजी मार्ग व उनकी देख–रेख की बखुबी जिम्मेदारी निभाने से ग्राम बीची व आस–पास के गांवों में पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूकता, नई चेतना का संचार हुआ है। इस अभियान में सिकोईडिकोन से शाखा प्रभारी, माधारोजपुरा श्री छीतर मल जाट, श्री सत्य नारायण योगी की विशेष भूमिका रही।

इन्दिरा महिला शक्ति पुरस्कार मिला

किसान सेवा समिति फागी की वरिष्ठ एवं सक्रिय सदस्य आशा सहयोगिनी श्रीमती मुन्नी कॅवर जी को कोरोना काल में अपने कार्यक्षेत्र में समर्पण भाव से उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवा व आमजन को जागरूक करने के सार्थक एवं प्रभावी प्रयासों के कारण राज्य सरकार ने इन्दिरा महिला शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया। इस महान उपलब्धि ने पूरे फागी–माधोराजपुरा क्षेत्र एवं किसान सेवा समिति को गौरवान्वित किया है।

महिला अधिकारिता विभाग की ओर से आयोजित इस सम्मान समारोह में, राजस्थान सरकार की मन्त्री महोदया (महिला व बाल विकास) श्रीमती ममता भूपेश, मन्त्री महोदया शकुन्तला जी रावत (उद्योग मन्त्री) ने मुन्नी कँवर जी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया। समारोह में राज्य के प्रशासन व पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति रही।

सम्मान समारोह में मन्त्री महोदया ममता जी भूपेश व शकुन्तला रावत ने अपने–अपने उद्‌बोधन में कहा श्रीमती मुन्नी कंवर जी ने कोरोना के संकट काल में जिसे कर्त्तव्यनिष्ठा एवं लगन से डिडावता व ढ़ाणियों में दवाईयां वितरित करना, सर्वे करना, जोखिम उठाकर आम जन को कोरोना नियमों का पालन करने हेतु जागरूक व प्रेरित किया। वह स्वास्थ्य कर्मियों के साथ सभी वर्गों के लिये अनुकरणीय है, एक सीख है।

सिकोईडिकोन संस्था की सचिव महोदया, माननीया मन्जू जी जोशी एवं किसान सेवा समिति महासंघ के अध्यक्ष श्री कैलाश गुर्जर ने मुन्नी कंवर जी को स्वास्थ्य क्षेत्र में सेवा भावी कार्यों के कारण राज्यस्तरीय पुरस्कार (सम्मान) मिलने पर शुभकामनाएं एवं बधाई दी व कहा कि मुन्नी कंवर जी ने सिकोईडिकोन संस्था एवं किसान सेवा समिति महासंघ की गरिमा बढ़ायी है, एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मियों को एक दिशा दी है।

श्रीमती मुन्नी कंवर जी का कहना है कि सन् 2006 में सिकोईडिकोन संस्था के सम्पर्क में आयी, उस समय मन में बड़ी झिझक थी, यहां क्या करेंगे, कैसे अपनी बात रख पायेंगे, परन्तु मेरी जैसी अनेक महिलाओं का संस्था के जुड़ाव के चलते मैं भी इसकी गतिविधियों में भाग लेने लगी।

संस्था द्वारा आयोजित कार्यशालाओं, शैक्षणिक भ्रमण से स्वयं की जिम्मेदारी निभाने के साथ–साथ समाज सेवा निष्ठा से करने की सीख मिली। उन्होने पुरस्कार हेतु राज्य सरकार का आभार जताया।

जल संरक्षण

– आशा देवी शर्मा

जल संरक्षण विधियां प्राचीन काल में बहुत से साधन थे। जैसे– बावड़ी, कुएं, टांके, तालाब, नदियॉ यही एक साधन था, लेकिन जल संरक्षण व इसका संचय नहीं करने के कारण इस जल का महिलाओं को जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा व दुरगामी लाभ व नुकसान क्या होंगे, इसका गांव वालों को मालूम नहीं था।

73वां संविधान संशोधन हुआ व 74वां संविधान संशोधन हुआ व महिलाओं की भागीदारी पंचायतों में भागीदारी 33ः से 50ः हुई, इसी का परिणाम है कि आज महिलायें समझ पाई की जल संरक्षण व जलवायु परिवर्तन का क्या असर होगा लोगों पर व उनके जीवन पर। क्योंकि शुद्ध पानी, शिक्षा, खाद्यान्न, स्वास्थ्य सही नहीं होगा तो सतत किवास लक्ष्य नं. 4 का कोई महत्व नहीं रह जाता।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से भी लोगों को जागरूक किया कि खेत का पानी खेत में, गांव का पानी गांव में, घर का पानी घर में। लोगों ने वहीं काम किया, तो 2005 में तो ज्यादा फोकस जल संरक्षण पर ही दिया। जिला परिषद सदस्य होने की वजह से मेरे को जलगांव, महाराष्ट्र जाने का मौका मिला। वहां बूंद–बूंद सिंचाई कैसे होती है और संस्था की वजह से मुझे पॉल साहब ने सार्क सम्मेलन में भी अपनी संस्था जो काम कर रहीं है जल संरक्षण का, उसकी बात रखने का भी मौका मिला।

सुन्दर लाल बुहुगुणा जी के साथ भी व अनुपम मिश्र व राजेन्द्र सिंह जी के साथ जल बचाओ अभियान व पर्यावरणविद् जैसे अनुभवियों के साथ संवाद का भी मौका मिला। सेन्टर फॉर सोशल रिसर्च संस्था द्वारा सम्मानित किया गया व सर्टीफिकेट मिला।

आज भी गांवों में खेती–किसानी व पशुधन ही आमदनी का जरिया है। उसी की वजह से हमारा क्षेत्र राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक स्तर पर बढ़ा है। हर समाज की बच्चियॉ शिक्षा में आगे हैं। हमारे क्षेत्र की संस्था का आभार है कि सरकार ने बहुत बाद में काम किया जल संरक्षण पर परन्तु संस्था ने 1981–82–83 से ही बाढ़ प्रभावित गांवों में लोगों के खाने, रहने व पुर्नवास पर काम करना शुरू कर दिया था, उसके बाद आवश्यकता के आधार पर काम किया। आज उसी का परिणाम है कि हमारी बच्चियॉ हर क्षेत्र में आगे हैं।

जल संरक्षण व जलवायु परिवर्तन का ही परिणाम है, आज हमारा जीवन स्तर ऊँचा हुआ है। जिस समय महिलायें घूंघट निकाल ली थी व घर से बाहर नहीं आती थी उस समय से महिलायें जुड़कर आज बहुत बड़ी श्रृंखला महिलाओं की हो गयी। हमारे क्षेत्र में बेहिचक अपने हक की बात को रख देती है, चाहे कोई–सा भी मंच हो। सबसे बड़ी बात है कि हर काम का बजट होता है तो जल प्रबन्धन का भी बजट होना चाहिए। पारंपरिक जल स्त्रोतों का समुदाय आधारित प्रबन्धन करना व नेटवर्क करके अनुभवों का आदान–प्रदान करना जैसे कई कार्यक्रमों में संस्था के माध्यम से अनुभवों को प्राप्त करने का मोका मिला।

पृथ्वी पर अधिकतर जल समुद्र व महासागरों में चला जाता है जो खारा है। कुछ ही जल पीने लायक बचता है अगर उसका भी हम संरक्षण नहीं रखेंगे तो जीवन लीला ही समाप्त हो जायेगी, यही सोच संस्था के माध्यम से ही मिली।

स्मृति शेष है, चौधरी साहब नहीं रहे

राम जी का नाम सॅू ध्येय वाक्य से अपनी बात शुरू करने वाले किसान सेवा समिति, चाकसू के पूर्व अध्यक्ष श्री रामाकिशन जी चौधरी नहीं रहे। ओजस्वी वक्ता चौधरी साहब किसान सेवा समिति, चाकसू के गठन की प्रक्रिया से जुड़े संस्थापक सदस्यों में से एक थे।

पूरे क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले ग्राम महाचन्दपुरा (चाकसू) आपकी जन्म स्थली व कर्मस्थली रहा। रामस्नेही सम्प्रदाय के अनुयायी यह ग्राम पूर्ण नशाबन्दी, छानकर पानी पीना, दिन में भोजन करना, रामद्वारे में अखण्ड ज्योति जलना जैसी अपनी अध्यात्मिक प्रवृति एवं सुसंस्कार की वजह से समाज के लिये प्रेरणा है, सीख है।

श्री रामाकिशन जी शुरू से ही समाज कार्य में जुड़े रहने के कारण, ग्राम के ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष बने एवं सिकोईडिकोन के प्रत्यक्ष सम्पर्क में अये, व संस्था गतिविधियों में सक्रियता से भाग लने लगे। सिकोईडिकोन के तत्कालीन सचिव महोदय माननीय शरद जी जोशी के मार्गदर्शन में आपकी खेती–किसानी, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, जल प्रबन्धन, चरागाह विकास आदि मुद्दों पर व्यापक समझ बनी, फिर आपने संस्था के विजन–मिशन पर निष्ठा, व मुद्दों पर समर्पण भाव से कार्य करते हुये किसान सेवा समिति, चाकसू के अध्यक्ष बने।

सिकोईडिकोन सचिव महोदय माननीय शरद जी जोशी के मार्गदर्शन व सांनिध्य एवं किसान सेवा समिति, चाकसू–फागी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री छीतर मल जी जाट के नेतृत्व में समर्थन मूल्य पर हुयी विशाल रैली व सभा में आपकी सक्रिय भूमिका थी। तब आप अधिकारियों व प्रेस की नजर में आये व आपको अलग पहचान मिली। इसके बाद भी आपने अनेक मुद्दे उठाये।

आपकी मुद्दों पर गहन समझ के चलते अधिकारी

वर्ग भी प्रभावित रहा व आप उपखण्ड अधिकारी की अध्यक्षता वाली सतर्कता कमेटी के सदस्य रहे। आप किसान सेवा समिति महासंघ (राज्य स्तरीय) के सम्मानित सदस्य रहे।

संस्था की सीख व आपके प्रकृति प्रेम के चलते जैविक खाद युक्त खाद – बीज से अपनी 2 बीघा जमीन पर वृक्षारोपण किया। विभिन्न प्रजातियों के आज वे पौधे लहलहा रहे हैं। इससे जैव विविधता बढ़ी है एवं पर्यावरण सुरक्षित हुआ है। जल एवं भू संरक्षण परियोजना के तहत आपने सार्वजनिक भूमि पर 2 एनिकट बनवाने में सक्रिय भूमिका निभाई। इन एनिकटों से करीब 10 कुओं का जलस्तर बढ़ा है। विभिन्न प्रजातियों के पक्षी भी यहां कलरव ध्वनि करते नजर आ सकते हैं।

सरकारी गैर सरकारी समन्वय कार्यशाला

सिकोईडिकोन एवं किसान सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में मालपुरा, निवाई, फागी, शाहबाद एवं चाकसू में क्षेत्रीय अधिकारियों एवं अन्य जन संगठनों के साथ क्षेत्र के विकास की गतिविधियां, राष्ट्रीय कार्यक्रमों में आपसी सहभागिता एवं क्षेत्रीय विकास के मुद्दों एवं क्षेत्रीय समस्याओं को लेकर समन्वय कार्यशालाऐं आयोजित की गयी। इनमें सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के गरीब तबके तक पहुँचना सुनिश्चित हो, इसकी रूपरेखा एवं रणनीति पर गहन मन्थन हुये।

इनमें अतिक्रमण मुक्त चरागाह, जल संरक्षण, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की किसान, महिला, दलित वर्ग का विकास, कृषि योजनाओं, बालिका, शिक्षा, स्वास्थ्य, फसल बीमा योजना (फसल खराबा) आदि मुद्दों पर विस्तृत चर्चा कर इनके समाधान के सामूहिक प्रयास पर चर्चा हुयी।

इन कार्यशालाओं में Ad. S.P. साहब, प्रशासनिक व पुलिस अधिकारी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने सक्रिय भूमिका रही। इससे क्षेत्र के सर्वांगीण विकास हेतु जन संगठनों व अधिकारी वर्ग में संवेदनशील एवं जवाबदेही की भावना और अधिक प्रगाढ़ हुयी।

पंचायत राज समन्वय कार्यशाला

सिकोईडिकोन एवं किसान सेवा समिति फागी, शाहबाद, चाकसू, निवाई, मालपुरा के संयुक्त तत्वावधान में सरपंच, जिला परिषद सदस्य, पं. सं. सदस्यों के साथ संवाद कर क्षेत्र के मुद्दों पर साझा समझ बनाने हेतु कार्यशाला के आयोजन किये गये।

संस्था प्रतिनिधियों ने इसमें संस्था के विज़न–मिशन व संस्था की गतिविधियों व उससे ग्राम में सामाजिक एवं आर्थिक विकास में हुये बदलाव का चित्रण किया व पंचायत राज के साथ मिलकर विकास की धारा को आगे बढ़ाने का लक्ष्य दोहराया व कहा हम पंचायत के सहयोगी है।

अनेक पंचायत राज प्रतिनिधियों अपने उद्‌बोधन में कहा सिकोईडिकोन, किसी परिचय की मोहताज नहीं है। इसके द्वारा किये गये प्राकृतिक संसाधन कार्य व अधिकार आधारित कार्यों व इनके उठाये मुद्दों से आम जनता को जागरूक किया है। सरकार व प्रशासन को भी संवेदनशील व जवाबदेही बनने हेतु प्रेरित किया है।

आपसी सार्थक संवाद व गहन मन्थन के बाद एक–दूसरे के साथ मिलकर समाज के समग्र विकास हेतु काम करने की रूपरेखा बनी।

जागो

– पवन श्रीवास्तव

जाति– धर्म या क्षेत्र गोत्र पर कोई कितना भी चिल्लाये।
वोट उसी को देना भैया जो काला धन वापिस लाये।।
राष्ट्रपति को भेजो ज्ञापन, देश में हो वापिस हो काला धन।
बांधो मुट्ठी, चीखो नारा, सत्तर लाख करोड़ हमारा।
जिसने लूटा हिन्दुस्तान, करो उजागर उसका नाम।
मुगलों ने गोरों ने काफी लूटा कुछ तो छोड़ दिया।
भारत के चोरों ने उनका कीर्तिमान भी तोड़ दिया।।

और एनिकट बन गया

सिकोईडिकोन संस्था द्वारा ग्राम पंचायत गोहन्दी एवं ग्राम विकास समिति बालापुरा एवं गोहन्दी के समन्वित एवं साझा सहयोग एवं प्रयासों से गोहन्दी में जल संरक्षण हेतु मात्र तीन माह में एनिकट का निर्माण हो गया।

इस एनिकट के निर्माण में सरपंच गोहन्दी श्री सूरज नारायण यादव, सिकोईडिकोन से श्री छीतर मल जाट एवं किसान सेवा समिति अध्यक्ष श्री हनुमान शरण यादव का योगदान सराहनीय व उल्लेखनीय रहा।

जो इस एनिकट की निर्माण प्रक्रिया में प्रारम्भ से पूर्ण निर्माण तक अनवरत रूप से सक्रियता से जुड़े रहे। समय, श्रम, पानी की आवक, भराव क्षमता पर तकनीकी अधिकारियों का सहयोग मिला। 23 लाख से बने इस एनिकट में 20 लाख सिकोईडिकोन 10ः जन सहयोग के साथ 50,000 रू. व्यक्तिगत रूप से सरपंच महोदय ने प्रदान कर जल संरक्षण के प्रति अपनी संवेदनशीलता व लगन (निष्ठा) का परिचय दिया।

इस एनिकट से क्षेत्र के 5 ग्रामों गोहन्दी, बालापुरा, खेजड़ा का बास, गोपाल नगर आदि ग्रामों की काया कल्प होगी। सिंचाई के साथ खाद्यान्न उत्पादन बढ़ेगा व जैव विविधता की विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों एवं वनस्पतियों का आश्रय स्थल बनेगा। धरती में नमी बढ़ेगी, कुओं का जलस्तर बढ़ेगा, जिससे क्षेत्र के विकास को नया आयाम मिलेगा।

25 दिसम्बर को इस एनिकट का निर्माण पूरा होने के बाद– संस्था ने यह एनिकट ग्रामीण समुदाय को समर्पित कर दिया। उद्घाटन समारेह में संस्था सचिव महोदया मन्जू जी जोशी एवं सिकोईडिकोन बोर्ड सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही।

कनिष्ठ अभियन्ता महोदय श्री माधवराज चौहान एवं ग्राम विकास अधिकारी श्री शिवनारायण गुर्जर ने इस जल संरक्षण एवं पर्यावरण कार्य में अपनी निःस्वार्थ सेवाऐं प्रदान की।

प्रकृति बचानी है

— रामगोपाल बलाई

खेती जलवायु से बिगड़ी, उपज या धटगी सारी रे।। टेर
जब से चाली मोटर, रेल, महंगा हो गया डीज़ल तेल प्रदूषण फैल्या भरी रे।। 1
बिजली जल्या कोयला अवशेष, ज्यासे फेली कार्बन गैस, बीमरियाँ फैली न्यारी रे।। 2
सारा जंगल लीना काट, अब मेहँ की जोवे बाट, काल की कर ली त्यारी रे।। 3
घटगो कुआँ वालो नीर, ज्यामें खारी आगी सीर, भूमि सब हो गई खारी रे।। 4
बढ़ती जनसंख्या को दोष, लेरिया जलवायु ने कोष, महंगाई छा गई सारी रे।। 5
मत कर प्रकृति से छेड़, धरती पे खूब लगाओ पेड, हरियाली लागे प्यारी रे।। 6
जैविक खेती ने अपना लो, देशाी खाद खेत में डालो, होवे तब मंगलकारी रे।। 7
साँची कहवे छै गोपाल, सारा विश्व हुआ बेहाल, मुद्दा मौसम का भारी रे ।। 8

किसान सेवा समिति महासंघ

आज़ादी के उपरान्त देश में विभिन्न संगठन अलग–अलग वर्गों के मुद्दों को लेकर किसान, गरीब व वंचितों की आवाज उठा रहे हैं। इसी क्रम में किसानों व गरीबों की आवाज को उठाने के लिए राज्य में अलग–अलग संगठनों में किसान सेवा समिति कार्य कर रही है। किसानों व वंचितों के मुद्दों की राज्य–स्तर पर आवाज़ को मज़बूत करने के लिए 2004 में किसान सेवा समिति महासंघ का गठन हुआ जो सतत् रूप से किसानों, गरीबों, वंचितों, महिलाओं व दलितों की आवाज़ को मज़बूत कर रही है।

महासंघ केवल जड़स्तर के मुद्दों को राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर ले जाता है अपितु राज्य व राष्ट्र स्तर पर नीतियों को जड़स्तर तक पहुंचाने व मुख्य रूप से क्रियान्वित हेतु कार्य करती है।

परिचय :-

किसान सेवा समिति महासंघ राज्य स्तरीय जन संगठन है– जो किसानों, महिलाओं, दलित, आदिवासी एवं वंचित वर्ग के सामाजिक–आर्थिक विकास एवं इनके हितों से जुड़े मुद्दों व अधिकारों की क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पैरवी करना है। जो विशुद्ध गैर राजनीति जन आन्दोलन पर आधारित है। महासंघ का प्रमुख कार्य राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण विकास से जुड़े मुद्दों को प्रकाश में लाना व उन पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करवाना है। समान विचारधारा वाले संगठनों को संगठित करने के साथ–साथ उसमें राष्ट्रीय बोध, समतामूलक, शोषण मुक्त समाज की रचना आदि नीतियों के प्रति सहमति बनाना भी महासंघ का लक्ष्य है। हम मूल्य आधारित ऐसी शक्ति हासिल करना चाहते हैं कि सरकारों को ऐसी नीतियों को बदलने को मजबूर करने की क्षमता हासिल कर सके जो जनहित की न हो। स्थानीय ब्लॉक एवं जिला स्तर पर संगठनों एवं समुदाय प्रतिनिधियों की जागरूकता एवं क्षमता वृद्धि करना ताकि वे सामुदायिक अधिकारों को वास्तविक रूप से लागू करने एवं सुनिश्चित करने में स्थानीय सुशासन प्रक्रिया, पंचायत राज एवं जन–आन्दोलनों के साथ सहज़ता से जुड़े रहे। ऐसे मुद्दों पर प्राथमिकता रहेगी, जो आमजन से जुड़े हुए हों, विशेषतः प्रयास– दलित, वंचित, महिला, बच्चे व किसान से जुड़े होंगे।

वर्तमान समय के कार्य :-

जलवायु परिवर्तन, शिक्षा की विसंगतियों एवं समानीकरण, महंगाई, राहत कार्य सर्वे, जैव परिवर्धित एवं जैव विविधता, अकाल, चारा–पानी, सार्वजनिक वितरण, असंगठित मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिले इस सन्दर्भ में महिला उत्पीड़न, भू–अधिकार, नरेगा, घुम्मकड़ जातियों के हितों पर, राज्य बजट पर, स्वास्थ्य।

भावी योजना:- राज्य स्तरीय संगठन के प्रतिनिधि राज्य के सभी जिलों से जुड़े हों तथा हम एकजुट होकर राज्यस्तरीय प्रयासों को ज्यादा गति दो पायें।

प्राथमिकताएं :-

जलवायु परिवर्तन ,राज्य की स्थायी अकाल एवं जलनीति बनवाना व प्रभावी क्रियान्वयन करवाने का सतत प्रयास। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ समुदायों तक पहुँचाना सुनिश्चित करना। पंचायतों को उनके अधिकार दिलवाना। खाद्य सुरक्षा की बिल की अनुपालन करना। शिक्षा के अधिकार बिल की सही अनुपालना।

महिलाओं व दलितों के अधिकारों को दिलवाना। भू–अधिकार से वंचितों को अपना अधिकार दिलवाना। साझा समझ वाली संस्थाओं से नेटवर्किंग

सीख :- जीवन वास्तव में अनवरत सीखने एवं विकास करने की प्रक्रिया है, सीखने की प्रक्रिया प्रभावी एवं उपयोगी हों, अतः प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने साथ–साथ उस समाज की ताकत एवं कमज़ोरियों से परिचित हो जिसका वह अंग है।

किसान सेवा समिति महासंघ

स्वराज कैम्पस, एफ-159-160, सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर-302022 (राज.)

टेलीफोन : 0141-2771488, 7414038811/22/33 फैक्स : 0141-2770330

UNIQUE PRINT IN • 9414363099